उत्तर प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में संचालित 'मिशन प्रेरणा' कार्यक्रम के अंतर्गत विकसित की गई अध्ययन सामग्रियों का विषय वस्तु विश्लेषण एवं उनके प्रति अध्यापकों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन

चंचल त्यागी
शोधकर्ता
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर

सारांश

बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम 'मिशन प्रेरणा' की घोषणा शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या अर्थात 4 सितंबर 2019 को माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा की गई जो कि पूरे प्रदेश में 5 सितंबर 2019 से लागू हुई। इसका उद्देश्य परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत सभी बच्चों को न्यूनतम दक्षताएं हासिल कराना है और तब से लगातार यह मिशन अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अग्रसर हैं।'मिशन प्रेरणा' बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख कार्यक्रम है जिसके माध्यम से बेसिक शिक्षा विभाग के अंतर्गत 1.6 लाख स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने का प्रयास है एवं इसका प्रारंभ मूलभूत शिक्षण कौशल पर विशेष ध्यान देने के साथ शुरू किया गया है। इससे बच्चों में समझ के साथ पढ़ने और बुनियादी गणित की गणना करने पर प्रश्नों को हल करने आदि की क्षमता विकसित होती है जो कि उनके भविष्य में अन्य कलाओं एवं विषयों के सीखने का आधार बनती है इसलिए सभी छात्रों के अध्ययन के परिणामों में सुधार लाने हेतु मार्च 2022 तक कक्षा एक से पांच में मूलभूत शिक्षा प्राप्त करने के लक्ष्य को ही सबसे महत्वपूर्ण माना गया है । जिसमें समस्त स्कूलों के 80% बच्चों तथा प्रत्येक विकास खंड द्वारा फाउंडेशनल लर्निंग गोल्स प्राप्त करते हुए विकासखंड, जनपद एवं मंडल को प्रेरक घोषित करने का लक्ष्य प्राप्त किया जाना है ।

इस मिशन का लक्ष्य वह दक्षताए है जो प्रत्येक कक्षा के बच्चे के लिए जरूरी है और उन्हें इसमें निपुण होना चाहिए क्योकि बेसिक विषयो जोकि जरूरी है उनमे बच्चो की रूचि पैदा करना और उनपर जोर देना जरूरी है।

प्रमुख शब्द:

बुनियादी शिक्षा, बेसिक शिक्षा परिषद, परिषदीय विद्यालय, मिशन प्रेरणा, प्रेरणा लक्ष्य, आधारशिला, ध्यानाकर्षण, शिक्षण संग्रह, ध्यानाकर्षण शिविर

प्रस्तावना:

बच्चों को स्वतंत्र रूप से लिखने पढ़ने समझने एवं प्रतिक्रिया करने के लिए विकसित करना, बच्चों में अंक, आकार आदि को समझने का तर्क पैदा करना बुनियादी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है बुनियादी शिक्षा का लक्ष्य है कि बच्चे स्वतंत्रतापूर्वक अपनी कोशिशों के माध्यम से समस्याओं के निराकरण में सक्षम हो सकते हैं। बुनियादी शिक्षा बच्चे के भविष्य की समस्त शिक्षा का आधार होती है इसके अभाव में बच्चे कोआगामी कक्षाओं में आने वाली कठिनाइयों से निपटने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु समय समय पर अनेक कार्यक्रम चलाए जाते रहे हैं जैसे कि सर्व शिक्षा अभियान और समग्र शिक्षा आदि। राष्ट्रीय शिक्षा 1986 नीति(1992 में संशोधित) तथा प्रोग्राम ऑफ ऐक्शन 1992 में इस बात पर बल दिया गया की सीखने के न्यूनतम स्तर निर्धारित किए जाने चाहिए। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के रूप में देश में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया जब एक स्वाभाविक छात्र के रूप में बच्चों द्वारा ज्ञान का सृजन करने क्षमता को पाठ्यक्रम कार्यान्वयन के केंद्र बिंदु के रूप में पहचाना गया और शिक्षक की भूमिका की कल्पना रुक रुक से सीखने की प्रक्रिया में सुगमकर्ता के रूप में की गई।

इसी पृष्ठभूमि में 2015 में एनसीईआरटी द्वारा समस्त प्रक्रिया को एक नजरिये से जांचने और कक्षा एक से आठ तक के पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के लिए दक्षताओं पर आधारित सीखने के प्रतिफलों को विकसित करने के लिए कार्य प्रारंभ किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में यह भी उल्लेखित है कि भारत सरकार के द्वारा 14 वर्ष तक के बच्चो को गुणवत्ता युक्त मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए जिसे **सर्व शिक्षा अभियान** का नाम दिया गया और इसके कार्यान्वयन हेतु उत्तर प्रदेश में **बेसिक शिक्षा परिषद** का गठन हुआ।यह परिषद प्रदेश में स्वायत्त रूप से बुनियादी

शिक्षा प्रणाली के कार्यान्वयन और उसमे आवश्यकता पड़ने पर परिवर्तन करने और समय-समय पर समीक्षा करने का कार्य करेगी।

शोध विषय की आवश्यकता

मिशन प्रेरणा बेसिक शिक्षा परिषद का एक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य बच्चो को शिक्षित करने के लिए जरूरी सामग्री,ट्रेनिंग और बुनियादी सुविधाए अध्यापको को उपलब्ध कराना है।

शोध विषय के उद्देश्य

मानव जीवन में प्रारंभिक शिक्षा का व्यक्तित्व निर्माण अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । जिसे प्रकार के बीज में विशाल वृक्ष के रूप में विकसित होने की संभावना छिपी रहती है उसी प्रकार बच्चों में अनेक अंतर्निहित क्षमताएं होती हैं जिनको शिक्षा कक्षा शिक्षण के माध्यम से निखारते हैं। शैशवावस्था व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से एक निर्णायक अवस्था होती है। इस अवस्था में माता पिता सहित अध्यापकों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर प्रमाणिक रूप से यह कहा जा सकता है कि "प्रत्येक बच्चा सीख सकता है"।परंपरागत कक्षा-शिक्षण में शिक्षकगण बच्चों की आयु, स्तर एवं पूर्व ज्ञान को ध्यान में रखकर रुचिपूर्ण और आनंददायी गतिविधियों को जोड़कर दैनिक कक्षा- शिक्षण को जीवन उपयोगी बना सकते हैं।परंपरागत कक्षा-शिक्षण में सकारात्मक सुधार लाना प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। प्राथमिक स्तर पर कक्षा शिक्षण रुचिकर एवं आनंददायी हो जिसके फलस्वरूप बच्चे अपनी कक्षा के अनुरूप निर्धारित दक्षताओं को भलीभाँति सीख सकें ।

बाल केंद्रित कक्षा शिक्षण, बच्चों के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम माना गया है जिसके द्वारा बच्चे कक्षा के अंदर एवं कक्षा के बाहर आनंदपूर्वक सहज भाव से सीखते हैं। वस्तुतः प्रारंभिक कक्षाओं में कक्षा शिक्षण को रुचिकर, आनंददायी, जीवंत एवं प्रभावी बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस कार्य को मूर्त रूप प्रदान करने की दिशा में राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा अभियान उत्तर प्रदेश लखनऊ के द्वारा सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान जानने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश में बेसिक शिक्षा परिषद मैं मिशन प्रेरणा कार्यक्रम लागू किया गया ।इसका उद्देश्य परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत समस्त बच्चों को न्यूनतम दक्षताएं हासिल करना है इस कार्यक्रम के माध्यम बेसिक शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश के एक लाख साठ हजार स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने का प्रयास है।नई शिक्षा नीति 2020 में फाउंडेशनल लिटरेसी ऐड न्यूमरेसी पर विशेष ध्यान केन्द्रित किए जाने के दृष्टिगत कक्षा एक से पांच के बच्चों में गणित एवं भाषा में अधिगम स्तर की प्राप्ति हेतु कार्य योजना बनाते हुए मिशन प्रेरणा के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। इस कार्य में आने वाली कठिनाइयों एवं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों तथा प्रारंभिक स्तर पर शिक्षकों की आवश्यकता एवं उनके शिक्षण के उपयोग के लिए तीन हस्तपुस्तिकाओ विकास किया गया है जिनका उपयोग कर शिक्षक अपने दैनिक कक्षा शिक्षण को रोचक एवं बाल केन्द्रित बना सकते हैं ये तीन हस्तपुस्तिका हैं--

- **आधारशिला (Foundational Learning)**
- **ध्यानाकर्षण (Remedial Teaching)**
- **शिक्षण संग्रह (Compendium)**
- **राज्य परियोजना कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान, उत्तर प्रदेश द्वारा विकसित हस्तपुस्तिका आधारशिला का विषयवस्तु विश्लेषण करना।**
- **राज्य परियोजना कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान, उत्तर प्रदेश द्वारा विकसित हस्तपुस्तिका ध्यानाकर्षण का विषयवस्तु विश्लेषण करना।**
- **राज्य परियोजना कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान, उत्तर प्रदेश द्वारा विकसित हस्तपुस्तिका शिक्षण संग्रह का विषयवस्तु विश्लेषण करना।**
- **राज्य परियोजना कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान, उत्तर प्रदेश द्वारा विकसित हस्तपुस्तिकाओं आधारशिला, ध्यानाकर्षण एवं शिक्षण संग्रह के संदर्भ में संबंधित शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन**

निम्न के संदर्भ में करना-

1-लिंग

2-स्थानीय (ग्रामीण एवं शहरी)

पारिभाषिक शब्दावली

बेसिक शिक्षा परिषद
बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश वर्ष 1972 में गठित एक स्वायत्तशासी निकाय है, जिसका उद्देश्य उत्तर प्रदेश में कक्षा एक से आठ तक के विद्यालयों में बुनियादी / प्राथमिक शिक्षा का गठन, समन्वय एवं आदि क्रियाओं को नियंत्रित करना है।

परिषदीय विद्यालय
बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश के अंतर्गत संचालित कक्षा 1 से 8 तक के सरकारी विद्यालयों को परिषदीय विद्यालयों की संज्ञा दी गई है।

मिशन प्रेरणा
नि: शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 के अंतर्गत 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए राज्य परियोजना कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान, उत्तर प्रदेश द्वारा वर्ष 2019 से चलाए जा रहे कार्यक्रम को 'मिशन प्रेरणा' कहा गया। मिशन प्रेरणा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तीन हस्तपुस्तिकाएं विकसित की गई है।

आधारशिला
कक्षा एक व दो के बच्चों में भाषा एवं गणित की गहरी एवं बुनियादी समझ विकसित करने एवं बच्चों में वांछित लर्निंग आउटकम में त्वरित सुधार के उद्देश्य से विकसित की गई हस्तपुस्तिका।

ध्यानाकर्षण
कक्षा एक से आठ तक की कक्षाओं में पढ़ाएं जाने वाले सभी विषयों जैसे हिंदी, गणित, विज्ञान व अंग्रेजी आदि के लर्निंग आउटकम्स की सम्प्राप्ति दर को अपेक्षा अनुरूप प्राप्त करने के लिए विकसित की गई हस्तपुस्तिका ।

शिक्षण संग्रह
शिक्षण संग्रह से आशय एक पुस्तिका के रूप में ऐसी सूचनाओं का संग्रह है जो आकर्षक स्कूल परिसर, शिक्षण कौशलों, शिक्षण योजनाओं, लर्निंग आउटकम्स, पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं जैसे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों से संबंधित है, जिनका उपयोग शिक्षक दैनिक कक्षा शिक्षण के नियोजन एंव क्रियान्वयन में कर सकते हैं।

ध्यानाकर्षण शिविर
सत्र के आरंभ में ही चिन्हित बच्चों के साथ चिन्हित मूलभूत लर्निंग आउटकम पर अगले 50 कार्य दिवस (लगभग दो माह) कार्य किया जाए। इसे ध्यानाकर्षण शिविर या आधारभूत शिविर कहा गया है।
शोध विषय का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य से संबंधित जो सीमाएं निर्धारित की गई है वह निम्नलिखित है:-

- प्रस्तुत शोध में मिशन प्रेरणा कार्यक्रम के संदर्भ में केवल आधारशिला, ध्यानाकर्षण एवं शिक्षण संग्रह हस्तपुस्तिकाओं का ही अध्ययन किया जाएगा।
- उत्तर प्रदेश के केवल बुलंदशहर जिले में स्थित परिषदीय विद्यालयों के अध्यापक-अध्यापिकाओं को ही शोध में शामिल किया जाएगा।

संबंधित साहित्य का अध्ययन
- राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (2000), ने बेसिक शिक्षा परियोजना के छह जनपदों में ड्रॉपआउट का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि समस्त जिलों में ड्रॉपआउट के दर में कमी आई है ।

- फराह (2002) ने परंपरागत विधि और दूरस्थ माध्यम से शिक्षण प्रशिक्षण लेने वाले अध्यापकों की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया । उन्होंने पाया कि परंपरागत विधि और दूरस्थ माध्यम से शिक्षण प्रशिक्षण लेने वाले अध्यापकों की अभी वृत्ति और ज्ञान कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (2003), ने प्राथमिक विद्यालय को उपलब्ध करायी गयी संदर्शिका की उपयोगिता का अध्ययन किया, अध्ययन में पाया गया कि न्यादर्श के विद्यालयों में शिक्षक संदर्शिका के उपयोग के कारण है30-35 प्रतिशत कक्षाओं में काफी अच्छा शिक्षण पाया गया ।
- संथानम. पी. (2005) ने सीखने की कठिनाइयों पर उपचारात्मक कार्यक्रम का अध्ययन किया ।अध्ययन में पाया गया कि उपचारात्मक शिक्षण के बाद सीखने की कठिनाई वाले बच्चो के उपलब्धि स्तर में वृद्धि हुई है।
- तिवारी. आशुतोष (2006) ने उत्तर प्रदेश में सभी के लिए शिक्षा कार्यक्रम की संकल्पना, रणनीतियाँ एवं क्रियान्वयन का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया । उन्होंने पाया कि बच्चों के नामांकन, ठहराव, नियमित उपस्थिति एवं गुणवत्तापरक शिक्षा में पूर्ण की स्थिति से वर्तमान की स्थिति में काफी वृद्धि हुई है ।

शोध प्रश्न

- राज्य परियोजना कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान, उत्तर प्रदेश द्वारा विकसित हस्तपुस्तिकाए आधारशिला ध्यानाकर्षण एवं शिक्षण संग्रह जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ये हस्तपुस्तिकाए विकसित की गई है क्या ये उन उद्देश्यों को प्राप्त कर पा रहे हैं ?
- शिक्षक भाषा की मूलभूत दक्षताओं को विकसित करने के उपायों को जान रहे हैं?
- पुरुष शिक्षक भाषा की मूलभूत दक्षताओं को विकसित करने के उपायों को जान रहे हैं?
- ग्रामीण महिला शिक्षक भाषा की मूलभूत दक्षताओं को विकसित करने के उपायों को जान रहे है?
- ग्रामीण पुरुष शिक्षक भाषा की मूलभूत दक्षताओं को विकसित करने के उपायों को जान रहे हैं?
- शहरी महिला शिक्षक भाषा की मूलभूत दक्षताओं को विकसित करने के उपायों को जान रहे है?
- शहरी पुरुष शिक्षक भाषा की मूलभूत दक्षताओं को विकसित करने के उपायों को जान रहे है?
- शिक्षक गणितीय दक्षताओं एवं उनको विकसित करने के तरीकों को समझ पा रहे हैं?
- महिला शिक्षक गणितीय दक्षताओं एवं उनको विकसित करने के तरीकों को समझ पा रहे हैं?
- पुरुष शिक्षक गणितीय दक्षताओं एवं उनको विकसित करने के तरीकों को समझ पा रहे हैं?
- ग्रामीण महिला शिक्षक गणितीय दक्षताओं एवं उनको विकसित करने के तरीकों को समझ पा रहे हैं?
- ग्रामीण पुरुष शिक्षक गणितीय दक्षताओं एवं उनको विकसित करने के तरीकों को समझ पा रहे हैं?
- शहरी महिला शिक्षक गणितीय दक्षताओं एवं उनको विकसित करने के तरीकों को समझ पा रहे हैं?
- शहरी पुरुष शिक्षक गणितीय दक्षताओं एवं उनको विकसित करने के तरीकों को समझ पा रहे हैं?
- शिक्षक विकसित समझ एवं कौशलों का शिक्षण में उपयोग कर सकेंगे?
- महिला शिक्षक विकसित समझ एवं कौशलों का शिक्षण में उपयोग कर सकेंगे?
- पुरुष शिक्षक विकसित समझ एवं कौशलों का शिक्षण में उपयोग कर सकेंगे?
- ग्रामीण महिला शिक्षक विकसित समझ एवं कौशलों का शिक्षण में उपयोग कर सकेंगे?
- ग्रामीण पुरुष शिक्षक विकसित समझ एवं कौशलों का शिक्षण में उपयोग कर सकेंगे?
- शहरी महिला शिक्षक विकसित समझ एवं कौशलों का शिक्षण में उपयोग कर सकेंगे?
- शहरी पुरुष शिक्षक विकसित समझ एवं कौशलों का शिक्षण में उपयोग कर सकेंगे?
- शिक्षक अधिगम परिणामों (लर्निंग आउटकम्स) की सम्प्राप्ति दर को अपेक्षानुरूप प्राप्त कर रहे हैं ?
- महिला शिक्षक अधिगम परिणामों (लर्निंग आउटकम्स) की सम्प्राप्ति दर को अपेक्षानुरूप प्राप्त कर रहे हैं ?
- पुरुष शिक्षक अधिगम परिणामों (लर्निंग आउटकम्स) की सम्प्राप्ति दर को अपेक्षानुरूप प्राप्त कर रहे हैं ?
- ग्रामीण महिला शिक्षक अधिगम परिणामों (लर्निंग आउटकम्स) की सम्प्राप्ति दर को अपेक्षानुरूप प्राप्त कर रहे हैं ?
- ग्रामीण पुरुष शिक्षक अधिगम परिणामों (लर्निंग आउटकम्स) की सम्प्राप्ति दर को अपेक्षानुरूप प्राप्त कर रहे हैं?
- शहरी महिला शिक्षक अधिगम परिणामों (लर्निंग आउटकम्स) की सम्प्राप्ति दर को अपेक्षानुरूप प्राप्त कर रहे हैं?

- शहरी पुरुष शिक्षक अधिगम परिणामों (लर्निंग आउटकम्स) की सम्प्राप्ति दर को अपेक्षानुरूप प्राप्त कर रहे हैं ?

शोध विधि:

प्रस्तावित शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा मानकीकृत विधि का प्रयोग किया जाएगा। हस्तपुस्तिकाओं के विषय वस्तु विश्लेषण हेतु विषय वस्तु विश्लेषण विधि एवं अध्यापकों के प्रत्यक्षीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोधकार्य में बुलंदशहर जिले में संचालित परिषदीय विद्यालयों का चयन किया जाएगा। बुलंदशहर जिले में 1868 (26/09/2021 तक) परिषदीय विद्यालय हैं। कुल परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कुल संख्या 8090 (26/09/2021 तक) है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा बुलंदशहर जिले में संचालित परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का चुनाव किया जाएगा। जिनकी कुल संख्या 500 होगी।

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा साक्षात्कार विधि एवं स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया जाएगा ।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा-

- प्रतिशत
- सहसंबंध
- टी-टेस्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Adhikari. Tejaswini. (2001). Study of five NMMC schools in Navi Mumbai. Mumbai.Tata Ins of Social Sciences. pg. 14
- Chauhan. S.S. (1979). The Innovations in Teaching and Learning Process. New Delhi. Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
- Dubey. R.R. (2006). Sarva Shiksha for special focus groups. Daily excelsior.
- Indian Institute of Education. Pune. (2006). A Study of the extent and causes of dropouts in primary schools in rural Maharashtra with special reference to girl dropouts. Pune : IIE ,pg. 155
- Kulkarni. P.V. & Yadav. M.S. (1974). A Comparative study of teaching by different methods of programming of different levels of pupils.

Web Access

- Chunauti/Guidelines for group-wise teaching learning activities in classes VI to VII from October 2017 onwards
- Government of National Capital Territory of Delhi, DoE (2016). GO No. PS/DE/2016/230, Retrievedfrom, http://edudel.nic.in/upload_2015_16/230_dt_29062016.pdf
- http:/www.ncert.nic.in/ncerts/tectbooks/textbook.htm
- https://prernaup.in/Login/TeachersCornerNew?KnowledgeRepository_Id=1&LastPhotoId=10&mode=Traini&modeTab=2
- https://www.scert-up.in/training-module.html
- Mission Buniyad 2018 guideline, Retrieved from:http://www.delhiplanning.nic.in/sites/default/files/MB.pdf
- Mission prerna 2019 framework ,Retrieved from:https://prernaup.in